Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 7762801

Roll No. 23261028043
Total Mark 58/75.00
Exam BACHELOR OF ARTS_DEC-2023
Subject A050101T - ANCIENT AND EARLY MEDIEVAL INDIA

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4/5						
1B	4/5						
1C	4/5						
1D	3/5						
1E	3/5						
1F	4/5						
1G	4/5						
1H	3/5						
1I	3/5						
2	13/15						
3	0/15						
4	0/15						
5	0/15						
6	0/15						
7	0/15						
8	13/15						
9	0/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-I

Date of Exam: 19/12/23 Shift: C1 Room No.: 25
Paper Code: A050101T Subject: History Year/Sem: 1/1
Name of Candidate: Devansh Pandey
Roll No. 2326102 8043

Signature of Candidate: Devansh Pandey
Signature of Invigilator
COE Facsimile

PART-II

Q	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

MARKS OBTAINED

Total Marks in Figures — Max. Marks
Total Marks in Words

A050101T
Paper Code

Signature of Evaluator

PART-III

Course: BA-Ist
Session: 2023-24 Year/Semester: 1/1
Subject Name: Ancient and early medieval India
Medium: English ○ Hindi ●

Paper Code: A050101T

Exam Date: 19122023

Name of Candidate: DEVANSH PANDEY

Father's Name: SATYAPRAKASH

महाविद्यालय का कोड
College Code: KN04

परीक्षा केंद्र का कोड
Exam Centre Code: KN04

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam
संस्थागत Regular ● | भूतपूर्व छात्र Ex-Student ○
व्यक्तिगत Private ○ | बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.
7762801

A050101T
Paper Code

PART-IV

नामांकन संख्या
Enrollement Number: CSJMA23000010 4517

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 23261028043

पेपर कोड Paper Code: A050101T

Signature of Candidate: Devansh pandey

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट- 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. अंकित में भरे जाने वाली प्रविष्टियाँ काली कलम से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जाये।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken the circles completely.

Correct Method	Incorrect Method
① ● ③ ④	✓ ✗ ◉ ●

4. Make no Stray marks on this sheet.

5. DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.

IN ORDER TO AVOD UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्धारित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की श्रेणी में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ छाड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, डिजिटल वॉच, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटिफिक केल्कुलेटर ले जाने की अनुमत्ता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रुपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की श्रेणी में आता है।

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़े।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1-24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. बी कॉपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-24) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Sub Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of th commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in statu as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
1	●	1	●	1	1	1	1	●	1	1
2	2	2	2	2	2	2	●	2	2	2
3	3	3	3	3	3	●	3	3	3	3
4	4	4	4	4	●	4	4	4	4	4
5	5	5	5	●	5	5	5	5	5	5
6	6	6	6	6	6	6	6	6	●	6
7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7
8	8	●	8	8	8	8	8	8	8	8
9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	●

Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns .

Paper Code
A05010१T

खण्ड - अ

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1(a)

कल्हण

कल्हण प्राचीन भारतीय इतिहास का एक महान इतिहासकार है। इसने इतिहास का जो वर्णन किया है वह शायद ही आजतक और किसी इतिहासकार ने किया हो। इसने अपनी रचना राजतरंगिणी जिसे 'कल्हण की राजतरंगिणी' के नाम से भी जाना जाता है, मे कश्मीर का बड़ा सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है। कल्हण इतिहासकार होने के साथ-साथ पुरातत्वविद् तथा साहित्यविद् के रूप में कश्मीर के राजा के बारे मे विस्तृत वर्णन देते है। कल्हण ने कश्मीर के राजा के बारे में बताया है कि कश्मीर का राजा उस समय अर्थात प्राचीन भारतीय इतिहास का एक महान शासक था तथा उसने अपने जीवनकाल मे कई युद्ध भी किए जिसमे वह हर बार विजयी होता गया परंतु आखिरी में किये गये युद्ध मे उसे हार का सामना करना पड़ा था। इसके अलावा कल्हण अशोक के बारे में भी बताता है कि अशोक ने कश्मीर के योगदान मे क्या भूमिका निभायी। अशोक ने अपनी धम्म नीति का प्रचार प्रसार भी कश्मीर में करवाया तथा अपने अन्य लोगों से करवाया।

इस प्रकार कल्हण एक महान इतिहासकार था जिसने गद्य के साथ-2 कुछ जगहों पर पद्य को भी

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 5 0 L 0 1 T

अपनाया है।

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(b)

सिंधु सभ्यता की नगर योजना

सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना अभी तक की नगर योजनाओं से बिल्कुल भिन्न है। यहाँ की सड़के उत्तर से दक्षिण की ओर जाती है तथा वे प्राय: समकोण पर काटती है। सिंधु घाटी सभ्यता मे मकानों की कई एक साथ लाइने भी प्राप्त हुई है। इसी प्रकार की 15 घरों वाली एक कुली लाइन हड़प्पा से भी प्राप्त हुई है। इसमें जो लोग रहते थे वे स्तर के हिसाब से विभाजित थे ये कुछ लोग दुर्ग में रहते थे कुछ निचले स्तर पर पूर्व मे रहते थे। धोलावीरा मे यह स्तर तीन भागो मे विभाजित है। यहाँ एक मोहनजोदड़ो से एक महास्नानागार भी प्राप्त हुआ है।

वास्तुकला

सिंधु घाटी सभ्यता में लोग कृषि करने लगे थे जिससे उन्हें अनाज या शिकार के लिए इधर उधर भटकना नही पड़ता था। और उनके पास कुछ समय शेष रह जाता था। जिसमें वे लोग वास्तुकला जैसे काम करते थे। मोहनजोदड़ो से एक नर्तकी की मूर्ति प्राप्त हुई है। इसके अलावा इन्होंने मातृ देवी की भी मूर्तियां

Paper Code
A 0 5 0 1 0 1 T

बनायी हैं उसमें एक औरत के नाभि से वृक्ष निकलता हुआ दर्शाया गया है। तथा ये मूर्तियां प्राय: टेरीकोटा की हुआ करती थी। यहां मुहरों पर पशुपतिनाथ का भी चित्रण मिलता है। जिसमें कुछ मुहरों पर स्वास्तिक प्राप्त हुआ है।

प्रश्नोत्तर क्रमांक 1(c)

सिंधु सभ्यता

उत्थान:- सिंधु सभ्यता का नाम सिंधु नदी के किनारे होने वाली सभ्यता के कारण रखा गया है तथा यह 2600 ई.पू. - 1900 ई.पू. तक चली थी

सामाजिक स्थिति:- यहां के लोग कृषि में गेहूं तथा अन्य फसलें उगाते थे तथा वास्तुकला में कुछ हद तक निपुण थे। यहां के लोग मछली पालन भी तथा शिकार भी करते थे।

राजनीतिक स्थिति:- सिंधु सभ्यता के लोगों में पुजारी वर्ग मुखिया होता था तथा उनका आदेश का पालन अन्य निम्न स्तर पर रह रहे लोगों द्वारा होता था।

धार्मिक तथा आर्थिक स्थिति:- सिंधु सभ्यता के लोग के प्रमुख देवता इंद्र माने जाते हैं तथा ये आर्थिक रूप से प्राय: कमजोर थे। ये लोग शिल्प कला तथा वास्तुकला भी करते थे। इनका व्यापार मेसोपोटामिया के साथ भी था।

पतन:- पर्यावरणीय असंतुलन के कारण इसका पतन हुआ

Do Not Write anything in this Portion

वैदिक सभ्यता

उत्थान:-
वैदिक सभ्यता का उत्थान सन 1500 ई०पू०-600 ई०पू० तक था। कुछ इतिहासकार ये कहते हैं कि ये बाहर से आये थे।

सामाजिक स्थिति:- वैदिक सभ्यता के लोगों की सामाजिक स्थिति सही थी। ये लोग कृषि के साथ साथ पशुपालन भी करते थे तथा इसमें वर्णों का विभाजन हो गया था
1) ब्राह्मण
2) क्षत्रिय
3) वैश्य
4) शूद्र

राजनीतिक स्थिति:- वैदिक सभ्यता में राजा होता था जो वंशानुगत होता था तथा इस सभ्यता के लोग कर भी देते थे जो अनिवार्य नहीं होता था उसे बलि कहते हैं।

धार्मिक और आर्थिक स्थिति:- सिंधु वैदिक सभ्यता के लोग के प्रिय भगवान प्रजापति थे वे लोग शिल्पकला में सिंधु सभ्यता के लोगों से ज्यादा निपुण थे।

पतन:- वैदिक सभ्यता के पतन के मुख्य कारण प्राप्त नहीं बल्कि इसमें वेदों का मौखिक आगमन हुआ था।

Paper Code A05010/T

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(d)

मौर्य

मौर्यों के उत्पत्ति की धारणा या विषय में इतिहासकारों मे बहुत विवाद है बौद्ध ग्रंथ मानते हैं कि ये लोग क्षत्रिय थे वो भी पिप्पलिवन के क्षत्रिय थे वहीं कुछ लोग इन्हें मानते हैं कि ये गाँव के मुखिया के पुत्र के रूप मे आगे बढ़े जो मोरों को बेचने तथा पालने का काम किया करते थे। ब्राह्मण धर्म इन्हें [illegible] की संज्ञा देता है अलग-अलग अर्थशास्त्रियों ने अलग-अलग अवधारणाएं प्रस्तुत की हैं। इस वंश का सबसे महान शासक अशोक था। जिसे अशोक महान के नाम से भी जानते हैं। इसने अलग-अलग जगहों पर विभिन्न प्रकार के शिलालेखों का निर्माण करवाया यें शिलालेख प्रायः सड़कों के किनारे लगे होते थे। इनमें अशोक द्वारा दिये गये आदेश होते थे। सड़कों के किनारे लगवाने का मुख्य कारण यह था कि लोग जो सड़क पर निकलें तो उनके आदेशों को पढ़ सकें। इस प्रकार उन्होंने वृहत तथा लघु शिलालेखों को भी बनाया है। इसके अलावा उन्होंने सात स्तम्भ शिलालेखों को बनाया है। जिनमें से कुछ टोपरा जो कि दिल्ली मे है। तथा इनका एक शिलालेख रुम्मिनदेई का अभिलेख बहुत महत्वपूर्ण है।

Paper Code A 0 5 0 1 0 1 T

Do Not Write anything in this Portion

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(e)

अशोक का धम्म

अशोक मौर्यकालीन एक महान शासक था अशोक के तेरहवें वृहत् शिलालेख से पता चलता है कि उसने कलिंग के युद्ध के बाद से युद्ध करना छोड़ दिया और शांति का मार्ग अपनाकर बौद्ध धर्म को अपना लिया अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार में बहुत योगदान दिया। अशोक ने अपने धम्म के प्रचार प्रसार के कारण अपने पुत्र तथा पुत्री महेंद्र तथा संघमित्रा को श्रीलंका भी भेजा था। इसके इन्होंने [illegible] बाहरी क्षेत्रों में अपने अनुयायियों को भेजा था अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाया था। जिसके प्रभाव से पता चलता है कि अशोक के प्रथम वृहत् शिलालेख के अनुसार, अशोक ने पशुवध पर रोक लगायी थी तथा नवें वृहत् शिलालेख के अनुसार उसने विवाहों, संस्कारों आदि में होने वाले अनुष्ठानों पर भी रोक लगाई थी।

अशोक ने बौद्ध धर्म को बहुत प्रसारित किया जिसके कारण इनके यहाँ की सामाजिक स्थिति पहले की तुलना पर बहुत प्रभाव पड़ा तथा वे लोग भी बौद्ध धर्म को अपनाने के लिए आगे बढ़े थे।

Paper Code
A 0 5 0 1 0 1 T

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1 (1)

गुप्तकालीन प्रशासन

प्राचीन भारतीय इतिहास का सबसे अच्छा प्रशासन मौर्यों का था इसके बाद गुप्त काल के शासकों की प्रशासन व्यवस्था आती है। इस काल में भी राजाओं ने बहुत से मंत्री नियुक्त किए थे जिनमें सबसे प्रमुख था :-

कुमारामात्य :- कुमारामात्य एक केंद्रीय स्तर का मंत्री था जो कि सभी कार्यों को अपने अंदर आने वाले मंत्रियों से करवाता था।

इसके अलावा अन्य मंत्री थे -

महासंधिविग्रहक :- यह विदेशी कार्यों या नीतियों से जुड़ा मंत्री था जो कि विदेश से आने वाले लोगों तथा विदेशी व्यापार का लेखा जोखा रखता था। इसके अलावा वह विदेशी करों को भी देखता था।

दण्डपाशिक :- यह पुलिस सेना का सबसे प्रमुख अधिकारी होता था।

विनयस्थितिस्थापक :- गुप्त काल में धर्मनीति से संबंधित जो भी कार्य होते थे वह विनयस्थितिस्थापक देखता था। इसके अलावा न्याय के लिए भी मंत्री था जो कि महादण्डनायक कहलाता था।

Paper Code A 0 5 0 1 0 1 7

Do Not Write anything in this Portion

यहाँ की प्रशासन व्यवस्था में निम्न स्तर में प्रशासन होता था।

साम्राज्य
↓
प्रांत
↓
विषय
↓
भुक्ती।

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1 (g)

हर्षवर्धन पुष्यभूति वंश का एक महान शासक था जो कि प्रभाकरवर्धन का पुत्र था उसकी बहन राज्यश्री का विवाह मौखरि वंश के राजा ग्रहवर्मन के साथ हुआ था देवगुप्त ने ग्रहवर्मन की हत्या कर दी जिससे राज्यवर्धन उसे बचाने के लिए गया तो शशांक ने राज्यवर्धन की हत्या कर दी इस प्रकार हर्षवर्धन पुष्यभूति वंश की गद्दी पर बैठा। हर्षवर्धन के ऐतिहासिक स्रोतों से इनके इस घटना की जानकारी मिलती है।

ऐतिहासिक स्रोत -:

1. ह्वेनसांग की सी-यू-की।
2. ताम्रपत्र अभिलेख
3. सिक्के
4. स्कंदगुप्त का भीतरी अभिलेख
5. अन्य स्रोत
6. हर्षचरित का बाणभट्ट

हर्षवर्धन के राज्य के बारे में सारी पूरी जानकारी ह्वेनसांग की रचना से प्राप्त होती है। तथा इसके अलावा इनके विजयों की गाथा भी इसी में लिखी है जबकि अन्य अभिलेख [illegible] के प्रशासन तथा सामाजिक स्थिति की बात [illegible] है।

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1(h)

नालंदा विश्वविद्यालय

प्राचीन भारतीय इतिहास में यह विश्वविद्यालय एक शिक्षा के क्षेत्र में अहम भूमिका निभाता है। नालंदा विश्वविद्यालय गुप्त वंश के शासक तथा चन्द्रगुप्त II के उत्तराधिकारी कुमारगुप्त द्वारा बनवाया गया था। नालंदा विश्वविद्यालय में जब ह्वेनसांग जो कि एक चीनी यात्री था जो बौद्ध धर्म में विश्वास रखता था जब भारत आता है तो नालंदा विश्वविद्यालय में ~~पहले~~ पहले उसने कई वर्ष शिक्षा ग्रहण की थी उसके बाद वह पूरे भारत की यात्रा पर आगे निकला।

नालंदा विश्वविद्यालय में केवल ह्वेनसांग ही नहीं अपितु कई ऐसे विदेशी यात्री थे जिन्होंने शिक्षा ग्रहण की। तथा यहाँ से कई साहित्यिक पुस्तकें भी उठाकर अपने देश ले गए। कुमारगुप्त नालंदा विश्वविद्यालय की वजह से ही गुप्त वंश का इतना प्रख्यात शासक परंतु समुद्रगुप्त तथा विक्रमादित्य (चन्द्रगुप्त II) के बाद का महान शासक था।

इस प्रकार नालंदा विश्वविद्यालय एक प्राचीन भारत का प्रमुख विश्वविद्यालय था

Paper Code A 0 5 0 1 0 1 T

जहाँ से अनेक विदेशी यात्रियों तथा आदीयों ने शिक्षा ग्रहण की थी।

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1(i)

मुहम्मद गोरी

मुहम्मद गोरी एक तुर्की यात्री था जो गजनी से भारत आया था। इसके भारत आक्रमण के कई उद्देश्य थे जिसके कारण इसने 1175-1206 ई तक भारत पर कई आक्रमण किए जिसमें इसने एक प्रमुख आक्रमण तराईन पर किया था जहाँ तराईन के दो युद्ध इसने पृथ्वीराज चौहान के साथ किए थे। इन युद्धों में तराईन के प्रथम युद्ध में तो उसकी हार हुई थी परंतु तराईन के II युद्ध में उसने पृथ्वीराज चौहान को हराकर राजपूतों का पतन किया। इसके उद्देश्य निम्नलिखित थे।

उद्देश्य:- भारत पर आक्रमण करने के मुहम्मद गोरी के निम्न उद्देश्य थे

1. भारत को लूटना इसका प्रमुख उद्देश्य था।
2. भारत में मुस्लिम शासन स्थापित करना।
3. भारत के राज्यक्षेत्र को अपने कब्जे में करना।
4. मुस्लिम राज्य का विस्तार करना।
5. भारतीय संस्कृति को आघात पहुँचाना

Paper Code A 0 5 0 1 0 1 T

(खण्ड-ब)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 2

सिंधु घाटी सभ्यता एक महानगरीय सभ्यता थी जिसका नाम सिंधु नदी के किनारे बसने वाली सभ्यता के आधार पर रखा गया था। सिंधु घाटी सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ कई स्थल प्राप्त हुए जैसे- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, धौलावीरा, रंगपुर, लोथल, कालीबंगा, बनावली।

इस सभी स्थलों में सामाजिक स्थिति तथा धार्मिक स्थिति में कोई ज्यादा परिवर्तन नहीं दिखाई पड़ता है परंतु आर्थिक स्थिति प्राय: अलग-अलग स्थानों पर अलग थी। इस बात को कहने में इसलिए कोई संदेह नहीं किया जा सकता है क्योंकि इस सभ्यता का पतन भी अलग-2 स्थानों में अलग-अलग समय हुआ है।

सामाजिक स्थिति

सिंधु घाटी सभ्यता की सामाजिक स्थिति अच्छी थी परंतु आगे आने वाली सभ्यताओं की तुलना में उतनी अच्छी नहीं थी। ये लोग शांत जीवन जीना पसंद करते थे। इनके समय में वर्ण व्यवस्था प्रचलित नहीं थी परंतु फिर कुछ भेदभाव तब भी था। इसलिए यहाँ

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A05010IT

नगर नियोजन में भी अंतर देखा जा सकता है इसमें नगर नियोजन व्यवस्था में कुछ लोग दुर्ग या किले पर रहते थे जबकि कुछ लोग निचले स्तर पर रहते थे। इस प्रकार यहां पुजारी वर्ग तथा सामान्य वर्ग के बीच भेदभाव दिखाई देता है। शांति के साक्षी होने बावजूद भी अभी हाल ही की खोजों में यह प्राप्त हुआ है कि ये लोग धनुष-बाण, कवच तथा तलवारें रखते थे। सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों के घरों में आकार परिवर्तन देखा जा सकता था जो इनकी सामाजिक स्थिति को बतलाता है।

आर्थिक स्थिति

सिंधु घाटी सभ्यता की आर्थिक स्थिति पूर्णतया कृषि तथा उनके व्यापार पर निर्भर करती है।

कृषि:- सिंधु घाटी सभ्यता के लोग कृषि करना जानते थे। ये लोग गेहूं, चावल के साथ-2 फलीदार वृक्षों को भी उगाते थे। इस सभ्यता में हल का भी प्रयोग होता था जिसका साक्ष्य कालीबंगा से प्राप्त टेरीकोटा के हल से पता चलता है। सिंचाई के साधन ज्यादा उपलब्ध नहीं थे जिसके कारण ये लोग सिंधु नदी के पानी का ही प्रयोग किया करते थे। अतः ये कृषि उनकी आर्थिक अर्थव्यवस्था का आधार थी।

Paper Code A 0 5 0 1 0 1 T

व्यापार एवं वाणिज्य :- सिंधु घाटी सभ्यता के लोग व्यापार भी किया करते थे। ये लोग मेसोपोटामिया से सामान लाते थे तथा उन्हें बेचते थे। यह इस बात से सिद्ध होता है कि यहाँ पर कुछ मेसोपोटामिया की मुहरें प्राप्त हुई हैं जिस पर वहाँ के अक्षर बने हैं तथा ये लोग जब लेखा जोखा रखते थे तो 16 के गुणज के रूप मापक इकाइयों का प्रयोग किया करते थे।

~~राजनीति~~ धार्मिक स्थिति

सिंधु घाटी सभ्यता के लोग धर्म में भी विश्वास करते लगे थे। ये लोग प्रायः सबसे ज्यादा ~~इंद्र~~ शिवदेवता को मानते थे। तथा इसके अलावा ये अन्य देवताओं के भी उपासक थे। इस सभ्यता के लोग निम्न देवताओं की पूजा करते थे।

1) इंद्र :- इंद्र इस सभ्यता के सबसे प्रमुख देवता थे जो प्रायः सभी लोगों से पूजे जाते थे। इसका वर्णन ~~ऋग्वेद~~ आर्यों में बाद में प्राप्त हुआ।

2) ~~मातृ~~ देवी माँ :- ~~इस~~ इस सभ्यता के लोग देवी माँ में विश्वास रखते थे। मोहनजोदड़ो से एक मूर्ति मिली है जिसमें उसके नाभि से एक वृक्ष निकलता हुआ दिखाया गया है इसे प्रजनन की देवी कहा गया है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 S 0 1 0 1 T

शंकर:- इस सभ्यता में एक मुहर प्राप्त हुई है जिसमें एक योगी की मुद्रा में एक व्यक्ति दिखाया गया है जिसके बाएं तरफ बाघ और सिंह तथा दाएं तरफ भैंसा और गेंडा को दिखाया गया है

प्रकृति (पेड़, जल):- ये लोग प्रकृति की पूजा भी करते थे जिसमें जल तथा पेड़ जैसे नीम तथा पीपल भी थे।

इस प्रकार सिंधु घाटी सभ्यता के लोग एक महान नगरीय जीवन जीते थे ये लोग शिक्षा की तरफ ज्यादा उन्नति नही कर सके थे परंतु सामाजिक व्यवस्था पहले की स्थिति में उन्नत तथा बाद की स्थिति से थोड़ी कमजोर थी। यहां पर भी सामाजिक भेदभाव को दिखाया गया है।

धार्मिक जीवन के बारे में कृषि और व्यापार के साथ शिल्प तथा वास्तुकला भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थी। यहां एक मुहर चलती थी जो कि उच्च स्तर पर ... के लिए लोग उसका प्रयोग करते ... धार्मिक स्थिति में विभिन्न देवताओं की पूजा किया करते थे

Paper Code A05 01 01 T

खण्ड - स

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 8

तुर्कों का आक्रमण

भारत में तुर्कों का आक्रमण प्राचीन भारतीय इतिहास के पतन का कारण बना तुर्कों ने राजपूतों की स्थितियों को हिला कर रख दिया ये तुर्क लोग 1001 ई. के बाद से भारत में रूख करने लगे जिससे भारत की सामाजिक आर्थिक तथा राजनीतिक स्थिति पर बड़ा आघात पहुंचा। दो तुर्की आक्रमणकारी जो प्रमुख थे उनके आक्रमण निम्न प्रकार हैं-

महमूद गजनवी

महमूद गजनवी एक महान तुर्की शासक था जो कि तुर्की में गजनी से भारत पर आक्रमण बोलने के लिए आगे बढ़ा था। इसने यह प्रण लिया था कि यह प्रत्येक साल भारत पर 1 आक्रमण करेगा। इसने सबसे पहला आक्रमण

1001 ई. में :- जयपाल पर आक्रमण किया था जहां इसने जयपाल को हरा दिया था।

1006 ई. में :- 1006 ई. में इसने मुल्तान पर आक्रमण किया था जहां इसने वहां के शासक को हरा दिया और सुखपाल को वहां का राजा बना दिया था। सुखपाल जयपाल

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A0S01D1T

की पुत्री का पुत्र था।

1001 ई० में: 1001 ई० में इसने पुनः मुल्तान पर आक्रमण किया और सुखपाल को हराकर मुल्तान पर विजय प्राप्त की।

1014 ई० में: 1014 ई० में इसने थानेश्वर थानेश्वर पर हमला किया और वहाँ के शासक को हरा दिया।

1018 ई० में: 1018 ई० में इसने मथुरा पर आक्रमण किया तथा वहाँ पर इसने उस राज्यक्षेत्र को अपने कब्जे में कर लिया था।

1025-26 ई० में: 1025-26 ई० में इसके द्वारा किया गया आक्रमण सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि यह गुजरात के सोमनाथ मंदिर पर किया गया था। यहाँ से यह मंदिर को तुड़वा कर मूर्तियाँ ले गया और मक्का और मदीना के सीढ़ियों पर लगवाया।

1027 ई० में: 1027 ई० में इसका सबसे अंतिम आक्रमण था।

इस प्रकार महमूद गजनवी ने 1001 ई० से 1027 ई० में कुल 17 बार आक्रमण किए।

Paper Code A0 S 0 1 0 1 T

मुहम्मद गौरी

मुहम्मद गौरी गजनवी के बाद भारत में रुख करता है और यह भी गजनी का ही शासक था। इसने कई आक्रमण किए।

मुल्तान पर आक्रमण :- 1175 ई० में इसने मुल्तान पर आक्रमण किया जहाँ किरमाती वंश का शासन था। इन्हें हराकर यह आगे बढ़ा।

उच्छ विजय :- 1176 ई० में इसने उच्छ पर आक्रमण किया जहाँ वहाँ की रानी को अपने चंगुल में फँसाकर वहाँ का राज्यक्षेत्र भी अपने कब्जे में कर लिया।

गुजरात पर आक्रमण :- 1178 ई० में इसने गुजरात पर आक्रमण किया जहाँ इसे भीमदेव II ने इसे वहाँ से खदेड़ दिया। यह इसकी पहली पराजय थी।

पंजाब पर आक्रमण :- इसने 1179 में पंजाब के रास्ते से आना अच्छा समझा, इसके बाद यह पृथ्वीराज चौहान से लड़ने के लिए आगे बढ़ा

तराइन का I युद्ध :- 1191 ई० में तराइन का प्रथम युद्ध हुआ जिसमें पृथ्वीराज चौहान युद्ध में विजयी हुआ।

Paper Code A 0 5 0 1 0 1 T

Do Not Write anything in this Portion

तराईन का II युद्ध! 1192 ई० में तराईन का II युद्ध भी पृथ्वीराज चौहान के साथ हुआ। जहाँ इसकी जीत हुई और राजपूतों को पराजय का सामना करना पड़ा।

चंदावर का युद्ध! - 1194 ई० में इसका युद्ध जयपाल के साथ हुआ जिसमें इसने कन्नौज को अपने कब्जे में ले लिया।

इस प्रकार तुर्कों के आक्रमण ने भारतीय सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिस्थिति पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

तुर्कों की सफलता के कारण:-

1) महान शासक! - तुर्कों की सफलता का प्रमुख कारण था कि वे लोग राजा वंशानुगत नहीं चुनते थे बल्कि उच्च तथा अच्छे स्तर का राजा का चुनाव करते थे जिसकी राजनीतिक स्थिति अच्छी थी।

2) तकनीकि स्थिति! - तुर्कों के पास अच्छे किस्म के तलवार तथा धनुष बाण थे वे लोग अधिकतर घुड़सवार तथा दूर से आक्रमण करते थे जबकि राजपूत तलवार चलाना जानते थे।

3) राजा का समान स्तर पर होना: तुर्कों का राजा सामान स्तर पर था सेना से कुछ ऊँचाई पर ही होता था

जबकि राजपूतों का राजा ऊँचे स्तर पर बैठता था जो कि यदि सेना देखती थी कि राजा वहाँ नहीं है तो वे हतोत्साहित हो जाते थे। और पीछे हट जाते थे।

4) पीछे हटकर वार करना:- तुर्कों का यह प्रमाण था कि वे अपनी सेना को पीछे करके ही युद्ध लड़ते थे जिससे विरोधी सेना आगे आती थी और वे उसे ~~धूल~~ चटा देते थे। धूल

5) सेना का टोली में बंटा होना:- तुर्कों की सेना विभिन्न टोलियों में बंटी होती थी जबकि राजपूत एक साथ वार करते थे जो कि तुर्कों की सफलता का प्रमुख कारण था यदि एक टोली थक जाती थी तो दूसरी टोली आगे आती थी।

इस प्रकार तुर्कों के आक्रमण ने भारत के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक स्थिति के साथ-साथ धार्मिक स्थिति को भी आघात पहुँचाया।

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

X

Paper Code

21

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

23

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

X